# जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

4 अगस्त 2026

जहाँ तू नित्य नये रूप में
अपने को प्रकट करता है,
वही स्थल मेरी जीवन-यात्रा
का अन्तिम लक्ष्य है,
उसी स्थल पर मुझे तेरे नाम
की पुकार करते हुए जाना है!
उस स्थल के लिए मेरा मन
कितना अनायास भागता है!

*प्रार्थना की वर्षा सहित शुभकामनाओं के गुलदस्तों संग*

समस्त पुरोहित, धर्मसंघी, लोकधर्मी तथा शुभचिंतक - बरेली धर्मप्रांत

*With Best Compliments from :*

**MARIA ASSUMPTA SCHOOL**

Dariyal Road, Khokratal, **KASHIPUR**
Phone : 05947-275212
e-mail : mariaschoolksp@gmail.com
web : www.mariaschoolkashipur.org

बरेली धर्मप्रांतीय पत्रिका

# चेतना

वर्ष 32 | अगस्त 2026 | अंक 08

# आज़ादी का भ्रम


निजी प्रसारण हेतु

दृढ़ीकरण संस्कार–पीलीभीत

BEC प्रशिक्षण – काठगोदाम

BEC प्रशिक्षण – पोलीगंज

युवा खेल उत्सव–बरेली

संत थॉमस पर्व – नवाबगंज

पल्ली समिति प्रशिक्षण – रूद्रपुर

कैंसर जागृति शिविर – लखनऊ

संत अंथोनी पर्व – शाहजहाँपुर

SJT धर्मबहनों की भेंट – बरेली

कापुचिन प्रोविंशियल की भेंट – बरेली

दृढ़ीकरण संस्कार – बैलपड़ाव

युवा जागृति शिविर – रूद्रपुर

साइबर सुरक्षा संगोष्ठी – करेली

आध्यात्मिक मनन चिंतन – पिथौरागढ़

पौधारोपण – खटीमा

पौधारोपण – सितारगंज

किशोरी सशक्तीकरण – मोतीनगर

धर्मशिक्षा सत्र शुभारम्भ – शाहजहाँपुर

पौधारोपण – धमोला

आत्मा अभिषेक साधना – सितारगंज

# चेतना

**Patron**
Most Rev. Ignatius D'Souza

**Editor**
Fr. Gregory Frank

**Editorial Board**
Fr. Ivan Crasta
Fr. Vivian Fernandes
Fr. Arun Saldanha
Fr. Francis Pinto
Fr. Vijay Tellis
Mrs. Sumita James
Miss Shweta D Cruze

Whatsapp No. : 8533886703
Publishing Head Quarters:
Bishop's House
63, Cantt., Bareilly - 243 001
website: www.bareillydiocese.org

Design & Printing
Conrad Publishing House
P-1/B-15, Opp. Dominos,
D.D. Puram, Bareilly
Phone: 0581-2300802

## अनुक्रम

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय | फा. ग्रेगरी फ्रैंक | 2 |
| 2. | Bishop's Message | Most Rev. Ignatius D'Souza | 3 |
| 3. | धर्माध्यक्ष का संदेश | अति मान्यवर डा. इग्नेशियस डिसूज़ा | 4 |
| 4. | Bishop's Engagements | Fr. Charles P. | 5 |
| 5. | Heavenly Bliss | Sr. Esme da Cunha, FDCC | 6 |
| 6. | The Freedom to PAUSE | Sr. Rekha Punia, UMI | 7 |
| 7. | Freedom and Surrender... | Sr. Smitha, FCC | 8 |
| 8. | Freedom vs Control | Sr. Sangeeta, BS | 10 |
| 9. | Freedom in Spirit | Sr. Rinki Nayak, FMA | 11 |
| 10. | Freedom According to Jiddu Krishnamurti | Sr. Helen, UFS | 12 |
| 11. | Does Freedom Mean Doing What I Like? | Nisha John Masih | 13 |
| 12. | Unlocking the Prison Within... | Fr. Ajay Lobo | 15 |
| 13. | Freedom in Mary's Surrender | Sr. Lavina Dabre, MSI | 17 |
| 14. | आज़ादी मनमानी नहीं है | एलिजाबेथ पैट्रिक | 18 |
| 15. | पवित्र आत्मा से वास्तविक स्वतंत्रता | फा. फ्रांसिस पिंटो | 20 |
| 16. | आज़ादी का भ्रम... ? | शिवांगी शर्मा | 21 |
| 17. | समाचार दर्शन | | 23 |
| 18. | बाइबिल प्रश्नोत्तरी | सुश्री श्वेता डिक्रूज़ | 27 |

**संत पिता का मतलब : अगस्त 2026**

**शहर में सुसमाचार प्रचार के लिए:**

आइए हम प्रार्थना करें कि अक्सर गुमनामी और अकेलेपन से घिरे बड़े शहरों में, हम सुसमाचार की घोषणा करने के नए तरीके खोज सकें और समुदाय के निर्माण के लिए रचनात्मक मार्ग तैयार कर सकें।

**Holy Father's General Intention: August 2026**

**For evangelization in the city:**

Let us pray that in large cities often marked by anonymity and loneliness we find new ways to proclaim the Gospel, discovering creative paths to build community.

सम्पादक की कलम से

# बैसाखी के सहारे आज़ादी

एक राजा को किसी ने दो चील पक्षी के बच्चे उपहार में दिये। राजा ने उन्हें अपने माली को दिये और कहा, "इनकी अच्छी देखभाल करना और इन्हें उड़ना सिखा देना।"

कुछ महीने बीत गये। राजा ने माली को बुलाकर उन चील पक्षियों के बारे में पूछा। माली ने कहा कि एक चील तो अब उड़ने लगा है परन्तु दूसरा चील एक पेड़ की डाल पर बैठा रहता है। जो दाना डालते हैं उसे खाता है। राजा को आश्चर्य हुआ। उसने खुद जाकर देखा कि एक चील डाल पर बैठा है। उन्होंने चील को उड़ाने के लिये कुछ शोर किया, हाथों से इशारा किया परन्तु चील टस-से-मस नहीं हुआ।

राजा के मंत्री के मन में एक विचार आया। उसने माली के कान में कुछ कहा और चले गये। दूसरे दिन जब वह राजा के साथ चील को देखने आया तो चील वहाँ नहीं था। माली ने कहा कि चील उड़ गया है। तब मंत्री ने राजा से कहा, "महाराज, इस चील ने पेड़ की डाल को अपना घर बना रखा था। माली इसे भर पेट खाना देता था, इसलिये इस चील को भोजन ढूँढने की जरूरत नहीं पड़ती थी। आराम के लिये पेड़ की डाल थी। मैंने माली से कहा कि अब तुम इसे दाना नहीं दोगे और इस पेड़ को भी कटवा दोगे। जाहिर है – जब भोजन और विश्राम दोनों नहीं मिले तो चील इनकी तलाश में उड़ेगा जरूर...!!"

आकाश में उड़ते पंछियों को देखें तो मन भी उड़ान भरने लगता है। सचमुच खुले आसमान में आजादी से उड़ने में कितना आनंद मिलता है। मुक्त पंछी बन गगन में विचरण करने में कितनी प्रसन्नता है। वास्तव में मानव आत्मा का मूल स्वभाव ही है-स्वतंत्रता। आज़ादी में सुख है और बंधन में है दुःख। भला दुःख किसे पसंद है? लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम यदा कदा नियम कानून को ताक में रख कर मनमर्जी करते रहें। इससे तो स्वेच्छाचार पनपेगा और समाज में अराजकता फैलेगी, व्यवस्था चरमरा जायेगी। मन में जो आये वैसा करना मनमानी है। नियम और मर्यादाविहीन जीवन स्वच्छंदता है।

आज के परिवेश में स्वच्छंदता को ही स्वतंत्रता मान लिया जाता है। नियम कानून मनुष्य जीवन के कवच है। इस कवच में रहने से ही जीवन की सुरक्षा संभव है। इस दायरे में रह कर अपने कर्तव्य निभाना और अपने अधिकारों का प्रयोग करना ही सच्ची आज़ादी है।

**स्वतंत्रता एक वचनबद्धता है:** वास्तविक स्वतंत्रता एक प्रतिबद्धता के साथ आती है। मैं एक ऐसे युवक से मिला जो अभी बीस वर्ष से भी कम आयु का है। केवल बारहवीं पास है। उसके पास न कोई प्रशिक्षण न कोई नौकरी है। पर वह अपने अमीर मित्रों के साथ हर प्रकार का नशा करने लगा है। रात-रात अपने दोस्तों के साथ होटल में बिताता है। इसके औचित्य के बारे में जब मैंने पूछा तो उसने उत्तर दिया कि यह उसकी निजी जिंदगी है। हमारे जीवन में कुछ भी निजी या प्राइवेट नहीं होता है। हम सब एक-दूसरे से जुड़े हैं। हमारा व्यक्तिगत विकास तभी संभव है जब हम एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए होते हैं। हमारे समुदाय का विकास भी हर व्यक्ति के योगदान से ही संभव हो पाता है।

स्वतंत्रता के दिवस पर हम माता मरियम के स्वर्गारोहण का पर्व मनाते हैं। माता मरियम हम सबके लिये पाप मुक्त स्वतंत्र जीवन का एक आदर्श है। माता मरियम हमें सिखाती हैं कि आज के चकाचौंध दुनिया में भी हम बाहरी आकर्षण और हमारी आत्माओं को बंधन में धकेलने वाली आदतों से स्वतंत्र होकर जी सकते हैं। माता मरियम ने स्वर्गदूत के संदेश के लिये "हाँ" कहा। इस एक "हाँ" को जीने के लिये उन्हें बहुत सी बातों, विचारों, मनोवृत्तियों को "ना" कहना पड़ा। यदि हम प्रभु की इच्छा के लिये हामी भरते हैं तो हमें अनेक सांसारिक और व्यक्तिगत इच्छाओं और मनोभावों को नकारना पड़ेगा। हम प्रार्थना करें, साथ ही साथ प्रयास करें कि हम मन को लुभाने वाले प्रलोभनों से दूर रह कर आंतरिक स्वतंत्रता का जीवन जियें।

**ग्रेगरी फ्रैंक**

# India at 79: A Journey of Freedom and Faith

Every year, **15th August offers us the grace of celebrating two profound events** that beautifully complement one another: **India's Independence Day and the Solemnity of the Assumption of the Blessed Virgin Mary.** While one commemorates the precious gift of freedom won through the sacrifices of countless patriots, the other celebrates the glorious destiny of Mary, assumed body and soul into heavenly glory. Together they remind us that true freedom reaches its fullness when it is rooted in God and directed towards the service of humanity.

As we celebrate the **79th Anniversary of India's Independence**, we remember with deep gratitude all those who dedicated their lives to securing the freedom, unity, and dignity of our nation. **Their sacrifice challenges us to cherish freedom not merely as a constitutional right but as a sacred responsibility**. Authentic freedom enables us to seek truth, uphold justice, respect the dignity of every human person, care for the vulnerable, and work tirelessly for peace and the common good. As Christians and responsible citizens, we are called to build a society marked by honesty, compassion, harmony, and fraternity.

On this same day, the Church joyfully celebrates the **Assumption of the Blessed Virgin Mary.** Mary's Assumption is the crowning of her faithful discipleship and a sure sign of hope for the whole Church. **Her humble *Fiat*, her wholehearted "Yes" to God's will, reveals that genuine freedom is found not in self-centredness but in loving obedience to God**. Her life teaches us that holiness blossoms through faith, humility, and generous service, and that those who faithfully follow Christ are destined to share in His eternal glory.

As we celebrate these twin solemnities, let us entrust our beloved India to the maternal care of Our Blessed Mother. **May she protect our nation from division, violence, corruption, injustice, and every force that weakens our unity.** May she guide our leaders with wisdom and integrity, strengthen our families, inspire our youth with noble ideals, and help each one of us become credible witnesses of the Gospel.

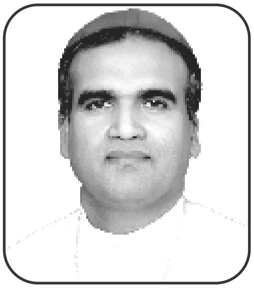

May our love for our motherland always be inspired by our love for God, so that every act of service becomes a witness to the Gospel and contributes to building a just, compassionate, and peaceful nation. **As Mary walked faithfully with Christ from Nazareth to Calvary and now reigns with Him in glory,** may she accompany us on our earthly pilgrimage, strengthening our faith, deepening our hope, and inflaming our hearts with selfless charity.

Let us celebrate this blessed day with grateful hearts and renewed commitment. **May our prayers rise for our nation, that India may continue to flourish in justice, peace, and unity, and may every citizen become an instrument of reconciliation and harmony.** Inspired by the Blessed Virgin Mary, let us courageously proclaim Christ through lives of holiness, integrity, and selfless service, so that our Diocese of Bareilly and our beloved nation may reflect ever more fully the values of the Gospel. May Our Lady Assumed into Heaven, Patroness of the Diocese of Bareilly, intercede for us, protect our nation, and lead us safely to our eternal homeland, where true freedom and everlasting peace are found.

**Happy Independence Day!**

**Happy Feast of the Assumption of the Blessed Virgin Mary!**

**† Ignatius D' Souza**
Bishop of Bareilly

धर्माध्यक्ष का संदेश

# 79वें वर्ष में भारत
# स्वतंत्रता और विश्वास की एक यात्रा

हर साल **15 अगस्त हमें दो महान अवसरों को मनाने का सौभाग्य प्रदान करता है** जो एक–दूसरे के परिपूरक हैं**: भारत का स्वतंत्रता दिवस और धन्य माता मरियम का स्वर्ग–ग्रहण पर्व।** जहाँ एक ओर अनगिनत देशभक्तों के बलिदान से प्राप्त स्वतंत्रता के अनमोल उपहार का स्मरण किया जाता है, वहीं दूसरी ओर माता मरियम के शरीर और आत्मा सहित स्वर्गीय महिमा में प्रवेश करने का उत्सव मनाया जाता है। ये दोनों अवसर हमें याद दिलाते हैं कि सच्ची स्वतंत्रता तब अपनी पूर्णता को प्राप्त करती है जब यह ईश्वर में निहित हो और मानवता की सेवा की ओर निर्देशित हो।

जैसे ही हम **भारत की स्वतंत्रता की 79वीं वर्षगांठ** मना रहे हैं, हम उन सभी लोगों को गहराई से और कृतज्ञता के साथ याद करते हैं जिन्होंने हमारे राष्ट्र की स्वतंत्रता, एकता और गरिमा की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। **उनका बलिदान हमें इस बात की चुनौती देता है कि हम स्वतंत्रता को केवल एक संवैधानिक अधिकार न मानें, बल्कि इसे एक पवित्र जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करें।** वास्तविक स्वतंत्रता हमें सत्य की खोज करने, न्याय को बनाए रखने, प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा का सम्मान करने, कमजोरों की देखभाल करने और शांति तथा जन–कल्याण के लिए अथक प्रयास करने में सक्षम बनाती है। ईसाइयों और जिम्मेदार नागरिकों के रूप में, हमें ईमानदारी, करुणा, सद्भाव और भ्रातृत्व (भाईचारे) से युक्त समाज के निर्माण के लिए बुलाया गया है।

इसी दिन, कलीसिया बड़ी खुशी के साथ **धन्य माता मरियम के स्वर्ग–ग्रहण** का उत्सव मनाती है। माता मरियम का स्वर्ग–ग्रहण उनकी निष्ठावान शिष्यता का शिखर है और संपूर्ण कलीसिया के लिए आशा का एक निश्चित प्रतीक है। **ईश्वर की इच्छा के प्रति उनका नम्र समर्पण ('हाँ' कहना), यह प्रकट करता है कि सच्ची स्वतंत्रता स्वार्थ में नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रति प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता में पायी जाती है।** उनका जीवन हमें सिखाता है कि पवित्रता विश्वास, नम्रता और उदार सेवा के माध्यम से खिलती है, और जो लोग ईमानदारी से मसीह का अनुसरण करते हैं, वे उनकी अनंत महिमा में भागीदार बनते हैं।

जब हम इन दोनों महान पर्वों को मना रहे हैं, तो आइए हम अपने प्यारे भारत देश को हमारी धन्य माता की मातृवत देखभाल में समर्पित करें। **माता मरियम हमारे राष्ट्र को विभाजन, हिंसा, भ्रष्टाचार, अन्याय और उन सभी शक्तियों से बचाएं जो हमारी एकता को कमजोर करती हैं।** वे हमारे नेताओं को ज्ञान और सत्यनिष्ठा प्रदान करें, हमारे परिवारों को मजबूत करें, हमारे युवाओं को महान आदर्शों से प्रेरित करें, और हममें से प्रत्येक को सुसमाचार का सच्चा साक्षी बनने में मदद करें।

हमारी मातृभूमि के प्रति हमारा प्रेम हमेशा ईश्वर के प्रति हमारे प्रेम से प्रेरित हो, ताकि सेवा का हर कार्य सुसमाचार का साक्षी बने और एक न्यायपूर्ण, दयालु और शांतिपूर्ण राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे। **जिस प्रकार माता मरियम नाजरेथ से कलवारी तक मसीह के साथ निष्ठापूर्वक चलीं** और अब महिमा में उनके साथ विराजमान हैं, उसी प्रकार वे हमारी इस सांसारिक यात्रा में हमारे साथ रहें, हमारे विश्वास को मजबूत करें, हमारी आशा को गहरा करें और हमारे हृदयों में निष्काम प्रेम की ज्योति प्रज्वलित करें।

आइए, हम इस धन्य दिन को कृतज्ञ हृदय और नवीनीकृत प्रतिबद्धता के साथ मनाएं। **हमारे देश के लिए हमारी प्रार्थनाएँ ऊपर उठें, ताकि भारत न्याय, शांति और एकता में निरंतर समृद्ध होता रहे, और प्रत्येक नागरिक सुलह तथा सद्भाव का माध्यम बने।** धन्य माता मरियम से प्रेरणा लेकर, आइए हम पवित्रता, सत्यनिष्ठा और स्वार्थहीन सेवा के जीवन के माध्यम से साहसपूर्वक मसीह का प्रचार करें, ताकि हमारा बरेली धर्मप्रांत और हमारा प्यारा देश सुसमाचार के मूल्यों को और अधिक पूर्णता से दर्शा सके। स्वर्ग में गृहीत माता मरियम, हमारे लिए मध्यस्थता करें,

**(क्रमशः पृ. 6)**

# CATHOLIC DIOCESE OF BAREILLY

## Bishop's Engagements

## August 2026

| Date | Day | Time | | Programme |
|---|---|---|---|---|
| 1st | Sat | | AM | Office |
| **2nd** | **Sun** | **10:30** | **AM** | **Holy Eucharist: Feast of St. Alphonsus de Ligouri, St. Alphonsus Cathedral, Bareilly** |
| | | 05:30 | PM | **Clergy Recollection, St. Alphonsus Cathedral, Bareilly** |
| 3rd | Mon | 06:30 | AM | **Holy Eucharist: St. Alphonsus Cathedral, Bareilly** |
| | | 09:00 | AM | **Annual General Body Meeting (AGBM), Bishop's House, Bareilly** |
| 4th | Tue | 05:30 | PM | Feast of St. John Mary Vianney: Ramnagar |
| 5th – 7th | Wed-Fri | | AM | Office |
| 8th | Sat | 08:00 | AM | Leaves for Mangalore |
| 9th – 10th | Sun-Mon | | AM | Pastoral Assignments in Mangalore |
| 11th | Tue | 07:30 | AM | Leaves for Ajmer |
| 12th – 13th | Wed -Thu | | AM | Attends ARPC Executive Committee Meeting in Ajmer |
| | | 10:30 | PM | Returns to Bareilly |
| 14th | Fri | | AM | Office |
| | | 06:30 | PM | Holy Eucharist: Foundation Day of SJT Congregation, Harunagla |
| 15th | Sat | 06:30 | AM | Holy Eucharist: Feast of Our Lady of Assumption, St. Alphonsus Cathedral, Bareilly |
| | | | AM | Attends Flag Hoisting Ceremony, Bishop Conrad School, Bareilly |
| | | 12:00 | PM | Holy Eucharist: Feast of Our Lady of Assumption Church, Kashipur |
| 16th – 17th | Sun - Mon | | AM | Office |
| 18th | Tue | | AM | Leaves for Dibrugarh |
| 19th – 20th | Wed -Thu | | | **Attends National Youth Directors Meeting in Dibrugarh** |
| 21st | Fri | 10:00 | AM | Returns to Bareilly |
| 22nd | Sat | 10:00 | AM | **Meeting of Sister Principals and Lay Principals, Bishop's House, Bareilly** |
| | | 05:00 | PM | Society Feast of MC Sisters: Motinagar |
| **23rd** | **Sun** | **08:00** | **AM** | **Bareilly Deanery Bible Festival** |
| | | **12:30** | **PM** | **Thanksgiving Mass: Golden Jubilee of Satyaseva Sisters Congregation, St. Alphonsus Cathedral, Bareilly** |
| 24th | Mon | 10:00 | AM | Meets Provincial Superior Rev. Sr. Philomena Sequeira DHM, Bishop's House, Bareilly |
| 25th – 26th | Tue– Wed | | AM | Office |
| 27th | Thu | 09:00 | AM | **YSM Conference - Touch of Hope: Care for Cancer, St. Alphonsus Cathedral Hall, Bareilly** |
| 28th | Fri | | AM | Office |
| 29th – 30th | Sat - Sun | | AM | YOUCAT India! Empowering Youth Through Dialogical Way: St. Alphonsus Cathedral Hall, Bareilly |
| 31st | Mon | | AM | Office |

**Fr. Charles P.** Secretary

# Heavenly Bliss

I glanced at our Liturgical Calendar for the month of August – and I was struck that everyday seems to be 'Heaven-centred! I had been thinking of focussing on the Transfiguration of the Lord and the Assumption of Mary into Heaven, in my article this month.

*Jesus took Peter, James and John and led them up a high mountain where they were alone…A change came over Jesus: His face was shining like the sun, and His clothes were a dazzling white!* (Mt. 17:1-2) It was a special moment – a glimpse of Heaven. And they saw Moses and Elijah too on either side of Him! Enough to put them and us in ecstasy forever!

But then I looked ahead at the other days of August.

A week or so after the celebration of the Transfiguration, we celebrate the feast of Mary being assumed into Heaven, body and soul! Another reminder for us that life here on earth is not '*the be all and the end all'* of our existence. We are meant for greater things!

Then, yet a week later, the Church invites us to rejoice at the Queenship of Mary in Heaven.

With that, it looked as if the stage was all set and done. But what I found next was unexpected and marvellous, at least to me. It was as if we are being led into a tour of heaven itself.

Oh! What a variety of saints we celebrate just in this one month. Let's have a look at them!

- John the Baptist (*Precursor*), Bartholomew (*Apostle*),
- Lawrence, Hippolytus and Maximilian Kolbe (*Martyrs)*,
- Sixtus, Pontian and Pius X (*Popes*),
- Augustine, Alphonsus Liguori, Dominic, Bernard (*Founders*),
- Clare and Jane Frances de Chantal (*Foundresses*)
- John Mary Vianney, John Eudes, Joseph Calasanz (*Priests*),
- Louis of France and Helena (*Kings and Queens*),
- Monica, Hyacinth, Mary of Jesus Crucified, (*women saints*)
- and Euphrasia (*one of our first Indian Saints*).

And these, we must remember, are only the 'Canonised Saints". What about the multitude who have lived and died in the odour of sanctity? People perhaps, we have even lived with …

It made me think that there must be place for each one of us too. Saints in the making! And those already there must be waiting to welcome us too into that heavenly glory. To quote St Augustine: *Our hearts were made for you, Lord.*

*And they do not rest until they rest in You!*

The call to Holiness is for everyone. Jesus excludes no one, and we have so many souls who have preceded us there. Every day is a day of grace – an invitation to surrender ourselves into His loving embrace. Who would want to miss or ignore such a unique privilege?

**Sr. Esme da Cunha Fdcc,** Prayagraj

✦✦✦✦✦✦✦✦

**(पृष्ठ 4 का शेष)**

हमारे राष्ट्र की रक्षा करें और हमें सुरक्षित रूप से हमारे अनंत देश की ओर ले जाएं, जहाँ सच्ची स्वतंत्रता और शाश्वत शांति पाई जाती है।

**स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!**

**धन्य माता मरियम के स्वर्ग-ग्रहण पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं!**

**† इग्नेशियस डिसूजा,**
धर्माध्यक्ष

# The Freedom to PAUSE

## (An Independence Day Reflection)

We recently concluded our Province Assemblies, where we journeyed together around very insightful yet demanding themes and one of those themes was: **"LISTENING: A Synodal Skill."** We reflected on listening to every voice, listening to God, listening to our own inner voice, and listening to one another without prejudice or judgement - listening not merely to reply, but to understand with empathy and compassion.

As the sessions unfolded, one question quietly settled in my heart and refused to leave. **What makes me react so instantly?**

Why do some words immediately trigger irritation? Why do certain opinions make me defensive? Why do I sometimes interrupt before the other person has even finished speaking? More importantly, **why do I lack the inner freedom to respond instead of react?**

Perhaps true listening begins much earlier than we imagine. It begins not with the ears, but with the heart. **I remembered a simple incident.** A teacher once shared how she wrongly scolded a little boy for not completing his homework. She assumed he had been careless. Only later did she discover that the child's father had been admitted to the hospital the previous night, and the little boy had spent the entire night caring for his younger sister. The teacher admitted, *"If only I had listened before I judged."* **That one moment changed the way she interacted with every child thereafter.**

How often do we do the same? We interpret *silence as arrogance, disagreement as disrespect, correction as rejection, or a hurried reply as indifference.* We react - not because we know the truth, but because we have created a story in our minds.

Someone wisely said, **"Between stimulus and response lies a space. In that space lies our freedom."** That tiny space is where true discipleship is born.

The person who cannot control anger is not free. The person who cannot bear criticism is not free. The person who must always have the last word is not free. The person who judges before listening is not free.

Real freedom is not the ability to do whatever we want. **Real freedom is the ability to choose love over impulse, understanding over assumption, and dialogue over domination.**

As India prepares to celebrate **Independence Day on 15th August**, we proudly remember the freedom won by our freedom fighters through immense sacrifice. Yet their dream was surely much greater than political independence alone. They envisioned citizens who would be responsible, respectful, compassionate, and united despite their differences.

Our nation today does not suffer merely because people think differently. **It suffers because too many people no longer listen!** Families break because no one truly listens. Communities become divided because people speak to defend rather than to understand. Social media often rewards instant reactions instead of thoughtful responses. **We have become quick to comment and slow to comprehend.**

Imagine an India where parents listened patiently to their children before correcting them...where teachers listened before labelling...where leaders listened before deciding...where religious communities listened before judging...where

neighbours listened before spreading rumours...where citizens listened even to those with whom they disagreed.

**Such listening would heal wounds that laws alone cannot.**

Then, families would argue less and understand more. Communities would replace suspicion with trust. Social media would become less toxic. Our workplaces would become kinder. Our religious communities would become more welcoming.

Perhaps the greatest contribution we can offer our country this Independence Day is not another speech on patriotism, but a personal commitment to cultivate **inner freedom** - *the freedom to pause before reacting, the freedom to listen without prejudice, the freedom to seek truth before forming opinions, and the freedom to let compassion have the final word.*

Because every peaceful family strengthens a peaceful society. Every understanding community builds a stronger nation. Every heart that listens becomes a bridge where others have built walls. Maybe this is where the Synodal journey truly begins - not only in our assemblies, meetings, or ministries, **but in that sacred moment when we choose to pause...to listen...and then to respond with love.**

And perhaps **the greatest gift I can offer my country this Independence Day** is not merely to wave the national flag with pride, but to become a citizen whose heart is free enough to build bridges instead of walls, dialogue instead of division, and hope instead of hurt.

*For every truly free heart quietly strengthens a truly free nation.* **Happy Independence Day and the Feast of the Assumption of our Heavenly Mother who personified this freedom of heart and spirit!**

**Sr. Rekha Punia, UMI,** Greater Noida

✦✦✦✦✦✦✦

# Freedom and Surrender

## The Paradox of Christian Spirituality

In the landscape of Christian spirituality, few themes are as profound and paradoxical as the interplay between freedom and surrender. At first glance, these concepts seem mutually exclusive - freedom implies autonomy and self-determination, while surrender suggests relinquishing control. Yet, within the Christian tradition, they form a harmonious paradox that reveals the depth of divine love and the path to true fulfilment.

Christian spirituality teaches that authentic freedom is found not in the absence of constraints but in aligning oneself with God's will. As Saint Paul writes in Galatians 5:13, "For you were called to freedom, brothers and sisters; only do not use your freedom as an opportunity for self-indulgence." Here, freedom is rooted in love and service, not in self-centred independence. Surrender, in this context, becomes an act of trust—trust in God's plan, love, and mercy.

A contemporary writer, Richard Rohr's *Falling Upward*, emphasize that true growth involves surrendering the ego and superficial attachments. Rohr states, "The spiritual journey is about surrendering the false self to discover the true self, which is already loved and accepted by God." This surrender is not defeat but liberation; it is the pathway to experiencing divine freedom.

For those in the consecrated life—monks, nuns, and religious brothers and

sisters—the paradox is lived daily. Their vows of poverty, chastity, and obedience are explicit acts of surrender that lead to a deeper freedom rooted in communion with Christ. As Mother Teresa famously said, "To surrender to Jesus is to surrender to love." Their commitment is a testament to the belief that surrender to God's will is the ultimate expression of love and freedom. Books like *The Fulfilment of All Desire* by Ralph Martin, highlight how consecrated life embodies the paradox: embracing limitations and surrendering personal preferences to serve a higher purpose grants a profound sense of peace and joy. It demonstrates that surrender is not a loss but a gain—an entry into the divine life.

Marriage, too, exemplifies this paradox. It is a covenant rooted in mutual surrender—each partner offering love, patience, and forgiveness, trusting in God's grace. Saint John Paul II, in his *Theology of the Body*, describes marriage as a "gift of self," where true freedom is found in self-giving. This sacrificial love mirrors Christ's love for the Church, where surrender becomes a pathway to deeper union. The commitments made in marriage call for continual surrender of self-interest for the good of the other, fostering authentic freedom through selflessness. As Pope Francis notes in *The Joy of Love*, "Marriage is a journey of surrender, of dying to oneself daily, to rise again in new life."

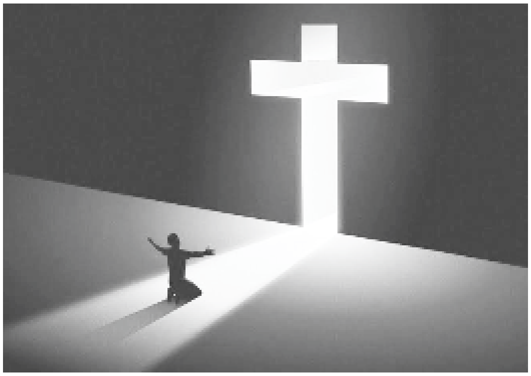

In the broader societal context, the failure to surrender manifests in individualism, materialism, and a denial of divine authority. The world often equates freedom with endless choice and autonomy, neglecting the spiritual dimension that calls for surrender to divine love. This resistance results in alienation, chaos, and spiritual emptiness.

Recent societal trends reveal a persistent struggle with letting go of control—whether in politics, relationships, or personal ambitions. The best example for this is Steve Jobs who invented Apple phone. He was highly ambitious, and his relentless pursuit of perfection and control over his vision led to groundbreaking innovations that changed the tech industry. His intense desire for control over every product design and his strong ego sometimes created conflicts within his team and with business partners who felt stifled or undervalued. Later in his career, after being ejected from Apple in 1985, Jobs experienced a period of personal growth and reflection. When he returned to Apple in 1997, he adopted a more collaborative approach, surrendering some control and ego, which contributed to the company's revival with products like the iMac and iPhone.

Understanding that surrender is a form of freedom can transform our approach to life. It invites believers to trust in God's plan, embracing vulnerability and humility. The spiritual journey becomes one of liberation—freeing oneself from ego, fear, and superficial attachments—by surrendering to divine love.

In conclusion, the paradox of freedom and surrender in Christian spirituality is a call to a higher form of liberty—one rooted in love, trust, and surrender to God's will. Whether in consecrated life, marriage, or everyday existence, embracing this paradox leads to authentic joy, peace, and fulfilment. Surrender, therefore, is the pathway to true freedom—a paradox worth embracing.

**Sr. Smitha FCC,**
Lucknow

# Freedom vs Control

It's a scene played out in homes every single day. A parent says, "Put on your shoes, we're leaving in five minutes," and a perfectly happy child suddenly throws a massive tantrum. To adults, this feels like stubbornness, defiance, or just unnecessary drama. We think we are simply doing our jobs—keeping them safe, healthy, and on time. But to a child, that simple command feels like an attack on their personal freedom. Why kids fight so hard against control isn't just about them trying to be difficult. It is actually a natural, healthy, and biological drive that is essential for them to grow up.

From the very first time a toddler learns to say the word "No," they are trying to figure out who they are. Psychologists call this process individuation, which is just a fancy word for becoming a separate person from your parents. To successfully build their own identity, kids must test boundaries and push back against rules. If they never challenged control, they would never learn how to think critically, solve problems, or make decisions for themselves as adults. When parents try to control every little detail—what a child wears, what they eat, who they play with, and how they spend every second of their day—the child's brain senses a threat to their freedom. This triggers a strong psychological urge to fight back, leading to shouting matches, slammed doors, or total emotional shutdown.

This fight for freedom is even harder for kids today than it was for previous generations. In the past, childhood freedom meant riding a bike around the neighborhood for hours with no adults watching, leaving kids to make their own choices and resolve their own conflicts. Today, children live highly structured, intensely monitored lives. Their days are packed to the brim with scheduled activities, heavy school pressure, and digital tracking apps. Because they have so little freedom in the real world, many kids escape into the digital world. Games like Minecraft or Roblox are incredibly popular because they give kids total control. In the game, they get to decide what to build, where to go, and who to talk to—a sense of power they rarely get to experience at the family dinner table.

Many parents worry that if they stop controlling everything, their family life will turn into absolute chaos. They assume that without constant supervision, kids will just eat junk food and watch screens forever. However, developmental research shows that being too strict actually causes the opposite effect, leading to deep anxiety or even bigger rebellion later in life. If kids are never allowed to make small, low-stakes mistakes early on—like refusing to wear a jacket and experiencing what it feels like to be cold—they never learn why good choices matter. They don't learn responsibility; they only learn how to follow orders out of fear, or how to hide their behavior to avoid getting caught.

Giving kids freedom does not mean letting them do whatever they want, nor does it mean having no rules at all. Kids actually need structure and clear boundaries to feel safe in a big world. The trick is to stop managing their every move and start collaborating with them. This can be as simple as offering controlled choices. Instead of demanding they eat their vegetables, you can ask if they want carrots or broccoli. The outcome is the same, but the child feels like they had a say. It also means explaining the reason behind a rule instead of relying on the frustrating phrase, "because I said so."

In conclusion, the daily power struggles we experience with our children are

not signs of failure, but signs of growth. The ultimate goal of raising children is not to produce a perfectly obedient child who relies on adults for every decision, but to nurture a capable, confident, and independent adult. By trading tight control for guided freedom, we give our children the space they need to fail safely and learn genuinely. The next time your child argues with you, take a deep breath and remind yourself: they aren't trying to ruin your day, they are just practicing the vital, messy art of becoming their own person.

**Sr. Sangeeta BS,**
Khatima

✦✦✦✦✦✦✦✦

# Freedom in Spirit

On 15 August, India celebrates its freedom from British rule. However, "freedom in the spirit" reminds us that true liberty goes beyond borders. It is about inner peace, human rights, and the courage to live without fear or limits. This spiritual freedom keeps the sacrifices of our past alive. Spiritual freedom means having a free mind. It is about controlling your own thoughts and action instead of letting outside things control you.

**True inner freedom means:** Letting go of fear: Being brave when life gets hard.

**Choosing kindness:** Treating others well. Liberty comes from living in communion with God. It is external restrictions, but freedom from the inner chains of sin, fear, pride, selfishness, resentment and despair. A person who is spiritually free is able to love, forgive, serve, and follow God's will with joy.

**As St. Paul writes:** "Where the Spirit of the Lord is, there is freedom." (2 Corinthians3:17)

This freedom is the work of the Holy Spirit, who transforms the human heart.

**A Deeper Reflection**: Many people appear free because they have wealth, power, or unlimited choices, yet remains by anxiety, addiction, or the need for approval.

**True spiritual freedom is:**

Freedom to love without selfishness.

Freedom to forgive without bitterness.

Freedom to obey God without fear.

Freedom to seek truth even when it is difficult.

Freedom to serve others without expecting rewards.

Jesus Himself is the perfect model of spiritual freedom. Though He accepted suffering and the He freely embraced the Father's will out of love. Spend time with God each day, allowing the Holy Spirit to guide your thoughts and decisions. Regularly identify attitudes or habits that enslave you and ask for God's grace to overcome them. Freedom in spirit is not absence of rules but the presence of God's grace. It is person God created us to be. A spiritually free person remains peaceful amid trials, joyful in service, faithful in suffering, and steadfast in hope because the Holy Spirit dwells within.

**In the Christian Tradition**: True freedom is not the ability to do whatever one desires, but the ability to choose what is true, and pleasing to God. This understanding is central to Christian moral theology and canon law.

**Prayer for Freedom:** Come, Holy Spirit, free my heart from everything that separates me from You. Grant me the courage to choose truth over convenience, love over selfishness, forgiveness over resentment, and Your Holy will over my own desires. May I live each day in the glorious freedom of Your children and become an instrument of your peace. Through Christ our Lord.

**Sr. Rinki Nayak, FMA,** Bareilly

# Freedom According to Jiddu Krishnamurti

As India celebrates its 80th Independence Day, we reflect on 'freedom' through the lens of Jiddu Krishnamurti (hereafter referred to as J.K.) *one of India's greatest thinkers and religious teachers of all time.* He contends that human beings, from childhood, are conditioned by a baggage of the past, which prevents them from **living in the present**, which he terms as a state of freedom. We delve into his understanding of freedom in view of liberating the mind from the conditioning so that we may experience the true freedom of the children of God.

**J.K's Anatomy of the Bondage:** J.K. posits that the mind is a product of time. From childhood, we are conditioned by culture, religion, language, and personal experience. This conditioning creates the 'I' – the ego or the self, which operates forcefully at various dimensions:

**i. The Trap of Relating to Yesterday's Image:** We do not look at a tree, a person, or an idea freshly. We look at them through the image we have already formed of them. For example, if someone has hurt me yesterday, I look at him / her today through the lens of yesterday's hurt. This has serious repercussions: the past modifies the present and projects itself into the future. By focusing on a future ideal, the mind avoids looking at its current state of fear, envy, violence….

**ii. Seeking Security in the Known:** The mind clings to the past because it seeks psychological security. The past is certain, known, and comfortable, even when it is painful. The present and future, being unknown, generate fear.

**iii. The Result is Division:** Banking on the memory of the past, creates a division between the past (the observer) and the present (the observed), which is the root cause of psychological conflict. In turn, it multiplies the bondages and makes freedom an illusory reality.

### Means to Stepping Out of the Bondage

To break free from the bondage of the past, is not possible through willpower, suppression, or a new system of belief, maintains J.K. Those are simply activities of the same conditioned mind trying to escape itself. True liberation requires a fundamental shift in awareness. J.K understands freedom as a reality that does not require a specific time, practice, or a specific step-by-step system. The following means help to step out of bondage of the past / to experience freedom of the children of God.

**a. Choice-less Awareness:** is a state of pure, quiet observation where I look at my thoughts, envies, and fears without trying to change them, suppress them, or run away from them. In that pure observation, I become fully and deeply aware of how my conditioning limits me; the momentum of the past begins to wither away, which brings about an immediate shift. In other words, the moment of awareness is the moment of change.

**b. Seeing the Deadness of Memory**

I must realize that memory, while essential for factual and technical tasks (like driving a car or speaking a language), is dead when applied to psychological relationships and living reality. Psychological memory – the residue of past praise or blame – distorts perception. Recognizing this truth deeply, rather than just intellectually, allows the mind to naturally let go of its heavy psychological baggage.

**c. Dying to the Past Everyday**

True freedom is the capacity to die to everything of yesterday – every insult, every flattery, every conclusion – so that the mind remains exceptionally fresh, young, and innocent. This isn't a future goal to achieve; it is a continuous, moment-to-moment action. When there is no psychological accumulation

at the end of the day, there is no past to be bound by tomorrow.

## Concluding Remarks

- We relate not directly but through the images we have built' – J. K. challenges us to observe our reactions, our dependencies, and our psychological hurts without judgement.
- What we call love, is in reality, a clinging to others out of fear of loneliness': where there is possession, there is inevitably jealousy, suspicion, and fear. True freedom is the freedom from the self – from this fragile, defensive ego that is constantly trying to protect its identity. To look at my fear, loneliness, or ambition without wanting to change it, suppress it, or run away from it requires immense energy. It is nothing but choiceless awareness.
- To move toward freedom means to live without psychological security, i.e., letting go of the anchors of my achievements, my labels, my wounds and even my concepts of right and wrong. This being a psychological death, we resist it; because, we prefer the comfortable prison of our memories to the vast, open sky of the unknown. '*You cannot find the unknown if you do not step out of the house of the known*'. When I allow the past to die each minute, the past loses its grip. This is freedom – the lightness of a mind that carries no baggage into the next moment, which enables me to live in freedom as the child of God.

**Sr. Helen UFS,** Nawabganj

✦✦✦✦✦✦✦

# Does Freedom Mean Doing What I Like?

### What Do Our Youth Understand By Freedom? What It Should Be?

**"Live as free people, but do not use your freedom as an excuse to do evil. Live as servants of God."**

***(1 Peter 2:16)***

If you ask many young people today what freedom means, they will probably say, "Doing whatever I want. No one can tell me what to do. My life, my rules." It sounds confident, modern, and attractive. Social media, influencers, and the saying "You only live once" often encourage this way of thinking. They tell us that the less we answer to others, the freer we become.

But is this really freedom? Or does it only look like freedom?

**Two Different Ideas of Freedom**

The world often says that freedom means living without limits. No rules, no authority, no commandments, and no consequences. We are encouraged to follow our own desires, live by our own truth, and answer to no one, not even God. This idea sounds attractive because God did create us to be free. But it is incomplete. It tells us what we should be free **from**, but not what we are free **for**. Freedom without purpose can become another kind of slavery. The Bible gives a fuller understanding. God sets people free, but always for a purpose. He frees us from sin so that we can become the people He created us to be.

Think of a fish. Is it truly free on dry land? It may move for a moment, but it cannot live there. A fish is truly free only in the water, where it was created to live. In the same way, we are truly free when we live according to God's loving plan. The world says freedom comes from removing every boundary. God teaches that His guidance is what allows us to live fully and become everything He created us to be.

## The Story of the Kite

There is an old story about a boy flying a kite on a windy afternoon. The kite rose high into the sky and danced beautifully in the wind while the boy held the string tightly in his hand.

The kite seemed to say, "Let me go. This string is holding me back. If you cut it, I will finally be free to fly wherever I want." The boy smiled as he felt the kite pulling harder and harder. Finally, he became curious and let go of the string. For one brief moment, the kite flew even higher. It seemed to have found complete freedom. Then everything changed.

Without the string holding it steady, the kite could no longer catch the wind properly. It spun out of control, twisted through the air, and crashed into the branches of a nearby tree, where it remained torn and unable to fly again. The string had never stopped the kite from flying. It was the very thing that made flying possible. The tension the kite disliked was the same tension that helped it rise higher.

Our lives can be the same. Many young people think God's commandments and guidance limit their freedom. At first, living without them may seem exciting. But without God's direction, life loses its balance and purpose. Instead of helping us rise, the loss of His guidance can cause us to fall.

## What the Youth today Need to Know?

Young people are not wrong to desire freedom. The desire for freedom is part of every human heart because we are created in the image of God, who is perfectly free. The problem is not the desire itself. The problem is misunderstanding where true freedom is found.

Real freedom is not found by living without God. It is found by living with Him.

As I think of the Religious, for example Missionaries of Charity Sisters. Many people see their vows of poverty, chastity, and obedience as giving up freedom. Yet many sisters testify that these vows have brought them deep peace, joy, and purpose. By giving their lives completely to God, they have found the freedom to love and serve others wholeheartedly. Their example reminds us that true freedom is not about having endless choices, but about choosing God's will with love.

## What does true freedom look like in daily life?

Freedom is not measured by how few rules we have. It is measured by whether those rules help us become the people God created us to be.

A student who studies regularly and manages time wisely is not less free. That discipline gives them the freedom to succeed.

Ask someone who has overcome addiction, escaped a harmful relationship, or found peace after years of anger. They will rarely say that freedom came from having no boundaries. Most will tell you that freedom came when they accepted the right boundaries, the ones God lovingly gives.

God's commandments are not meant to make life difficult. They are signs of His love. They guide us, protect us, and help us live the life He planned for us. So, does freedom mean doing whatever we want?

Not really. True freedom means becoming the person God created us to be. We discover our true identity not by turning away from God but by growing closer to Him.

Jesus leaves us with this promise: "So if the Son sets you free, you will be free indeed." (Jn 8:36)

This is the freedom worth seeking. It is not the freedom to do whatever we want. It is the freedom to become everything God, in His love, created us to be.

***True freedom not as the mere ability to do whatever we want, but as the moral responsibility and right to do what we ought.***

***(-St. Pope John Paul II)***

**Nisha John Masih,** Bareilly

# Unlocking the Prison Within

## Removing the Barriers to Inner Freedom

A wealthy man sat alone in his luxurious home, surrounded by everything money could buy. His shelves were filled with awards, possessed expensive cars and owned lot of wealth. To the world, he showed himself as successful and free man. But every night he battled with anxiety, loneliness and an addictions that he could not overcome. He had external freedom but lacked inner freedom. At the same time, in a small prison cell, a Christian imprisoned for his faith spent his days in prayer, forgiving those who had condemned him and encouraging fellow prisoners with hope. For example, Victor Frankl in the Nazi concentration camp or Fr. Stan Swamy in India were physically confined, but their hearts were filled with a peace that no prison bars could imprison. Here we see two kinds of people with two different experiences of freedom. One possessed everything but lacked freedom; the other possessed almost nothing, but lived in profound freedom. This paradox reveals one of the deepest truths of human existence: freedom is not measured by what we possess but by what possesses us.

Freedom is one of the deepest longings of every human heart. People seek freedom in wealth, success, relationships, knowledge or power, believing these will bring lasting happiness. But many who possess these things remain restless, anxious, and spiritually empty. The greatest battle for freedom is not fought in society or politics but within the human heart. Every person experiences an inner struggle between good and evil, grace and sin, love and selfishness, hope and despair. This inner battle determines whether we live as children of God or remain enslaved by destructive habits and desires. Therefore spiritual freedom is a lifelong journey of surrendering ourselves to God's transforming grace.

**Prayer is a Battle Field for Freedom:** For Christians, prayer is the battlefield for inner freedom It is not simply asking God for divine favors. Prayer is a transformative encounter in which the human heart is gradually conformed to the will of God. In prayer surrender our will to Gods will. The life of Jesus offers the perfect model of this truth. Before every significant moment Jesus withdrew himself into solitude place to pray. He spent forty days in prayer and fasting before confronting the temptations in the wilderness (Mt. 4:1–11), prayed through the night before choosing the Twelve Apostles (Lk. 6:12–13), and sought communion with the Father in Gethsemane before embracing the Cross (Lk. 22:39–46). Similarly every disciple is called to discover that the deepest battles are not first fought in the world but within the heart.

**Sin: The Obstacle to Freedom:** Sin is one of the greatest obstacles to inner freedom. It often disguises itself as pleasure, success, self-expression, promising happiness and liberty. But every sin ultimately enslaves rather than liberates. Jesus expressed this truth clearly: "Everyone who commits sin is a slave to sin" (Jn. 8:34). This reality is especially evident in the modern world, where new forms of slavery have emerged beneath the appearance of freedom. Many people find themselves addicted to mobile phones and social media, constantly seeking validation through notifications and virtual approval. The widespread availability of pornography and the normalization of impurity have also enslaved countless minds and hearts, reducing human dignity and distorting authentic love. These addictions promise satisfaction but gradually make one slaves to it.

**Forgiveness: The Path to Freedom:** One of the deepest forms of inner slavery is the inability to forgive. Many people carry the wounds of betrayal, rejection, injustice for years, allowing resentment and bitterness to

occupy their hearts. Forgiveness does not deny the reality of evil, excuse wrongdoing, or remove the demands of justice but gives freedom. By forgiving, we do not change the past, but we free ourselves from being controlled by it. The best example is Jesus himself. On the Cross, in the midst of unimaginable suffering, He prayed, "Father, forgive them; for they know not what they do" (Lk. 23:34). Therefore forgiveness is a profound act of liberation. In forgiving others, we open our hearts to the transforming love of Christ, who alone can heal every wound and lead them into the fullness of inner freedom.

**Self-Discipline: The foundation for true freedom:** True freedom is the fruit of a disciplined life. Christian freedom requires discipline. Discipline is not punishment but training the heart to choose what is good consistently. Each small act strengthens our spiritual life which leads to freedom. St. John Paul II states, "Freedom consists not in doing what we like, but in having the right to do what we ought." Therefore Christian discipline is a means of becoming more fully alive in Christ and trying to imitate him alone. The saints understood that discipline is the foundation to holiness and freedom.

Freedom is one of the greatest gifts God has bestowed upon the human person. This freedom attained through constant struggle within. Pride, jealousy, greed, anger, lust, resentment, and selfish ambition quietly imprison the soul, preventing it from experiencing the peace that God desires for His people. The battle for freedom begins when a person honestly acknowledges these interior struggles instead of hiding or justifying them. The inner battle for freedom continues throughout life. True freedom is not found in unlimited choices but in belonging completely to God. This is the freedom that transforms lives, heals hearts, and leads us into the fullness of life with God.

**Fr. Ajay Lobo,** Bangalore

✦✦✦✦✦✦✦

## स्वतंत्रता दिवस

आओ मिलकर दीप जलाएँ,
भारत माँ का मान बढ़ाएँ।
वीरों की कुर्बानी याद करें,
उनके सपनों को साकार करें।
तिरंगा ऊँचा लहराए सदा,
देश हमारा बढ़े आगे सदा।
प्रेम, शांति का दें संदेश,
मिलकर बनाएँ महान देश।

न कोई ऊँच-नीच का भेद रहे,
हर दिल में भारत का प्रेम रहे।
मेहनत, ईमान और सम्मान,
यही है अपने देश की शान।
आओ मिलकर यह प्रण करें,
भारत का गौरव सदा बढ़ाएँ।
स्वतंत्रता का रखें सम्मान,
जय हिंद ! जय भारत !

**एंजल,**
संत एंथोनी इंटर कॉलेज,
ज्योलीकोट

✦✦✦✦✦✦✦

## आज़ादी या सोने का पिंजरा

पंद्रह अगस्त फिर आ पहुँचा
झंडा ऊँचा, गान महान
पर खुद से बस इतना पूछो
क्या सच में आज़ाद है इंसान ?
सोने का पिंजरा चमक रहा,
सब कहते- "यही है सम्मान।"
चिड़िया बोली - "शान नहीं,
उड़ना ही है मेरी पहचान।"

याद रहे इस स्वतंत्रता दिवस पर
बस, उत्सव ही नहीं मनाना है
हर अन्याय के सामने डटकर
आजादी का मान बढ़ाना है,
आजादी का मान बढ़ाना है।
जय हिन्द जय भारत

**मेघा सक्सेना,**
मदर तेरेसा विद्यालय करेली

# Freedom in Mary's Surrender

*"Behold, I am the handmaid of the Lord. Let it be done to me according to your word."* (Luke 1:38)

Freedom is often understood as the ability to choose our own path, make our own decisions, and live according to our own desires. The world tells us that freedom means having no limits and living according to our own will. Yet, the Blessed Virgin Mary reveals a much deeper and more beautiful meaning of freedom. Her life teaches us that true freedom is not found in doing whatever we want, but in willingly surrendering ourselves to the loving will of God.

At the Annunciation, Mary was invited to become the Mother of the Son of God. The angel did not compel her; God patiently waited for her free response. Though she did not fully understand what lay ahead, Mary entrusted herself completely to God and replied, *"Let it be done to me according to your word."* Her "Yes" was not a sign of weakness but of extraordinary courage, faith, and freedom. She freely chose God's plan over her own, trusting that His wisdom would guide her every step.

Mary's surrender did not take away her freedom it fulfilled it. By placing her life in God's hands, she discovered the very purpose for which she had been created. She embraced uncertainty with confidence because she believed that God's plans were greater than her own. Even when she experienced misunderstanding, rejection, hardship, and finally the agony of standing beneath the Cross, she remained steadfast. Her freedom was rooted not in control, but in complete trust.

There is a beautiful story about a little clay pot that once complained to the potter, "Why do you press me so hard? Why do you keep shaping me? Why must I pass through the fire?"

The potter smiled and gently replied, "If I leave you as you are, you will remain only a lump of clay. If I stop shaping you, you will never become beautiful. And if I keep you away from the fire, you will never become strong enough to hold anything precious."

The clay trusted the potter and surrendered itself completely. After passing through the fire, it emerged as a beautiful vessel, admired by all and capable of carrying life-giving water.

Is this not the story of Mary? She allowed God, the Divine Potter, to shape every moment of her life. She never resisted His loving hands, even when His plan led her through uncertainty and suffering. Her surrender did not destroy her freedom; rather, it transformed her into the Mother of the Savior. Because she trusted the Divine Potter completely, her life became a vessel through which God's grace entered the world.

Our lives, too, are often marked by unexpected changes, disappointments, unanswered prayers, and uncertain futures. We make careful plans, yet God sometimes leads us along paths we never expected. Like Mary, we are invited to surrender not because God wishes to take away our dreams, but because He desires to lead us to something far more beautiful than we could ever imagine. Every act of surrender frees us from fear, anxiety, pride, and the constant need to control everything ourselves.

Mary teaches us that surrender is never passive resignation. It is an active choice to trust, to love, and to remain faithful even when the future is hidden from our eyes. Her life reminds us that God's will is never a burden but always an invitation to abundant life. The more we allow God to guide us, the more we become the people He created us to be.

Today, our world often equates freedom with independence and self-

sufficiency. Mary offers another vision a freedom born of love, obedience, humility, and complete trust in God. Her simple "Yes" changed the course of human history because it was offered with a free and open heart.

The prophet Isaiah beautifully expresses this truth: ***"Yet you, Lord, are our Father. We are the clay, you are the potter; we are all the work of your hand."*** (Isaiah 64:8). When we place ourselves in the Potter's hands, He shapes us with love, patience, and wisdom into the masterpiece He has always intended us to be.

May we learn from Mary to surrender our fears, our plans, and our future into God's loving hands. Like her, may we have the courage to say "Yes" each day, believing that His will is always for our good. For it is only when we surrender ourselves completely to God that we discover the deepest joy, lasting peace, and the true freedom for which we were created.

**Sr. Lavina Dabre MSI,**
Motinagar, Haldwani

✦✦✦✦✦✦✦

# आज़ादी मनमानी नहीं है

"भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो; पर अपनी स्वतंत्रता को शरीर की वासनाओं का अवसर न बनने दो, बल्कि प्रेम से एक-दूसरे की सेवा करो।" (गलातियों 5:13)

आज का मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है। युवा स्वतंत्रता चाहते हैं, बच्चे स्वतंत्रता चाहते हैं, समाज स्वतंत्रता चाहता है और प्रत्येक राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करना चाहता है। वास्तव में स्वतंत्रता मनुष्य के जीवन का एक अनमोल वरदान है। ईश्वर ने मनुष्य को एक कठपुतली के रूप में नहीं बनाया, बल्कि उसे बुद्धि, विवेक और स्वतंत्र इच्छा प्रदान की। मनुष्य सोच सकता है, निर्णय ले सकता है और अपने जीवन की दिशा चुन सकता है। लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने आता है क्या स्वतंत्र होने का अर्थ यह है कि हम जो चाहें, वही करें? क्या आज़ादी का अर्थ किसी नियम, अनुशासन या नैतिक सीमा को स्वीकार न करना है?

सच्ची स्वतंत्रता हमें अच्छाई चुनने, ईश्वर से प्रेम करने और अपने भाई-बहनों की सेवा करने की शक्ति देती है। जिस स्वतंत्रता का उपयोग पाप, स्वार्थ, घृणा और अनैतिकता के लिए किया जाता है, वह धीरे-धीरे मनुष्य को फिर से गुलाम बना देती है।

सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने आदम और हेवा को अदन वाटिका में रखा। उन्हें अनेक वरदान और स्वतंत्रता प्रदान की गई। ईश्वर ने उन्हें चुनाव करने की क्षमता दी। परन्तु स्वतंत्रता के साथ एक सीमा और जिम्मेदारी भी थी। ईश्वर की आज्ञा कोई बोझ नहीं थी। वह मनुष्य की भलाई के लिए थी। लेकिन जब आदम और हेवा ने अपनी स्वतंत्रता को ईश्वर की इच्छा से अलग करके मनमानी के रूप में प्रयोग किया, तब पाप ने मानव जीवन में प्रवेश किया।

यह घटना हमें एक गहरी शिक्षा देती है। जब मनुष्य अपनी स्वतंत्रता को ईश्वर से अलग कर देता है, तो वही स्वतंत्रता उसके लिए बंधन बन सकती है। आज भी यही सत्य हमारे जीवन में दिखाई देता है। मनुष्य कहता है- "यह मेरा जीवन है, मैं जो चाहूँगा वह करूँगा।" परन्तु यदि यही सोच उसे नशा, हिंसा, अशुद्धता, झूठ, लालच, घृणा और स्वार्थ की ओर ले जाए, तो क्या वह वास्तव में स्वतंत्र है? नहीं। वह अपनी ही इच्छाओं और कमजोरियों का दास बन जाता है।

प्रभु येसु कहते हैं- "यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे" (योहन 8:36)। येसु जिस स्वतंत्रता की बात करते हैं, वह केवल बाहरी बंधनों से मुक्ति नहीं है। वे हमें पाप की गुलामी से मुक्त करने आए। वे हमें घृणा से प्रेम की ओर, निराशा से आशा की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से जीवन की ओर ले जाते हैं। कई बार हम बाहर से स्वतंत्र दिखाई देते हैं, पर

भीतर से अनेक चीजों के गुलाम होते हैं। कोई अपने क्रोध का गुलाम है, कोई ईर्ष्या का, कोई मोबाइल और सोशल मीडिया का, कोई नशे का, कोई धन के लालच का और कोई अपनी प्रतिष्ठा तथा अहंकार का। हम स्वयं से पूछें–क्या मैं सचमुच स्वतंत्र हूँ?

यदि मैं किसी को क्षमा नहीं कर सकता, तो मैं अपने क्रोध का गुलाम हूँ। यदि मैं सत्य बोलने से डरता हूँ, तो मैं भय का गुलाम हूँ। यदि मैं मोबाइल के बिना कुछ समय शांत नहीं रह सकता, तो शायद मैं तकनीक का गुलाम बन रहा हूँ। यदि मैं दूसरों की प्रशंसा के बिना खुश नहीं रह सकता, तो मैं लोगों की स्वीकृति का गुलाम हूँ। येसु हमें इन सभी बंधनों से मुक्त करना चाहते हैं।

आज का युवा पहले की तुलना में अधिक अवसरों और अधिक स्वतंत्रता के बीच जी रहा है। इंटरनेट, मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने पूरी दुनिया को उसकी हथेली पर ला दिया है। ज्ञान प्राप्त करने के अनेक साधन उपलब्ध हैं। अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए अनेक मंच हैं। लेकिन हर वरदान के साथ जिम्मेदारी भी आती है। आज एक क्लिक से हम किसी की सहायता कर सकते हैं और एक क्लिक से किसी को अपमानित भी कर सकते हैं। हम सोशल मीडिया के माध्यम से ईश्वर का संदेश फैला सकते हैं या अफवाह और नफरत भी फैला सकते हैं। हाँ, ईश्वर ने हमें चुनाव की स्वतंत्रता दी है। लेकिन हर चुनाव का एक परिणाम भी होता है। यदि हम बीज चुनने के लिए स्वतंत्र हैं, तो हमें यह भी याद रखना चाहिए कि एक दिन उसी बीज की फसल काटनी होगी। आज़ादी हमें चुनाव का अधिकार देती है, लेकिन चुनाव के परिणामों से मुक्त नहीं करती। येसु पूर्ण रूप से स्वतंत्र थे। वे किसी राजनीतिक सोच, सामाजिक दबाव या लोगों की प्रशंसा के गुलाम नहीं थे। उन्होंने सत्य बोला, गरीबों के साथ खड़े हुए, पापियों को क्षमा दी और समाज द्वारा ठुकराए गए लोगों को अपनाया। लेकिन येसु ने कभी अपनी स्वतंत्रता का उपयोग स्वार्थ के लिए नहीं किया।

गेथसेमनी की वाटिका में उन्होंने प्रार्थना की "हे पिता! मेरी नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो" (लूकस 22:42)। यही सच्ची स्वतंत्रता की सबसे सुंदर तस्वीर है। येसु स्वतंत्र थे, फिर भी उन्होंने पिता की इच्छा को चुना। उन्होंने क्रूस को स्वीकार किया, क्योंकि उनका जीवन प्रेम और मानव मुक्ति के लिए समर्पित था। आज संसार कहता है– "जो मन करे, वही करो।"

येसु कहते हैं– "जो प्रेम सिखाता है, वह करो।"

संसार कहता है– "पहले अपने बारे में सोचो।"

येसु कहते हैं– "एक–दूसरे से प्रेम करो, जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है।"

संसार कहता है– "बदला लो।"

येसु कहते हैं "अपने शत्रुओं से प्रेम करो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो।" यही मसीही स्वतंत्रता है।

आजादी मनमानी नहीं है। आजादी का अर्थ हर सीमा को तोड़ना नहीं, बल्कि उस मार्ग को चुनना है जो जीवन की ओर ले जाता है। ईश्वर ने हमें स्वतंत्र बनाया है क्योंकि वे हमसे प्रेम करते हैं। वे चाहते हैं कि हम उन्हें भी स्वतंत्र रूप से प्रेम करें। सच्चा प्रेम कभी मजबूरी से नहीं होता। लेकिन जब हम अपनी स्वतंत्रता से ईश्वर, सत्य, प्रेम और सेवा को चुनते हैं, तब हमारा जीवन वास्तव में सुंदर और अर्थपूर्ण बनता है।

हम अपनी स्वतंत्रता को पाप का अवसर न बनाएँ। अपनी आजादी को प्रेम का माध्यम बनाएँ। अपनी आवाज को सत्य के लिए, अपने हाथों को सेवा के लिए, अपने कदमों को शांति के मार्ग पर और अपने हृदय को ईश्वर के लिए समर्पित करें।

संत पौलुस के शब्द सदैव हमारे हृदय में गूंजते रहें "मसीह ने हमें स्वतंत्र रहने के लिए स्वतंत्र किया है" (गलातियों 5:1)।

आज़ाद बनें लेकिन प्रेम करने के लिए। स्वतंत्र बनें लेकिन सेवा करने के लिए। अपनी इच्छा से जिएँ लेकिन ईश्वर की इच्छा को चुनते हुए। क्योंकि सच्ची आजादी मनमानी में नहीं, मसीह में है।

**एलिजाबेथ पैट्रिक**, रानीखेत

# पवित्र आत्मा से वास्तविक स्वतंत्रता

आज संसार भर में लगभग हर कोई व्यक्ति स्वतंत्र जीवन जीना चाहता है। कोई आर्थिक स्वतंत्रता चाहता है, कोई सामाजिक, कोई राजनीतिक, तो कोई अपनी इच्छानुसार जीवन जीने की स्वतंत्रता चाहता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि आज मनुष्य क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, लालच, वासना, अशुद्ध विचारों और पापपूर्ण कार्यों का गुलाम बन गया है। अनेक लोग मोबाइल, सोशल मीडिया, नशा, अंधी प्रतिस्पर्धा और स्वार्थपूर्ण जीवन के बंधनों में जकड़े हुए हैं। बाहर से वे स्वतंत्र दिखाई देते हैं, परंतु भीतर से बेचैन, असंतुष्ट और दुखी हैं। ऐसे परिवेश में बाहरी स्वतंत्रता भी उन्हें वास्तविक आनंद नहीं दे सकती। पवित्र आत्मा हमें इन अदृश्य जंजीरों से मुक्त कर सच्ची शांति, आनंद और उद्देश्यपुर्ण जीवन प्रदान करता है। प्रभु येसु कहते हैं, **"यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे।"** (योहन 8:36)

मनुष्य तब तक सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक उसका हृदय पवित्र आत्मा के अधीन न हो जाए। संसार बाहरी स्वतंत्रता देता है, परंतु पवित्र आत्मा अंत:करण की स्वतंत्रता प्रदान करता है। जब हृदय ईश्वर के प्रेम से भर जाता है, तब जीवन वास्तव में स्वतंत्र, आनंदमय और अर्थपूर्ण बन जाता है। पवित्र आत्मा हमें पाप से मुक्त करता है, भय पर विजय दिलाता है, प्रेम के मार्ग पर चलना सिखाता है और ईश्वर की संतान के रूप में आनंदपूर्वक जीना सिखाता है।

### पवित्र आत्मा पाप की गुलामी से सच्ची स्वतंत्रता तक कैसे ले जाता है?

बाइबिल हमें सिखाती है कि मनुष्य पाप के कारण बंधन में है। किंतु पवित्र आत्मा हमें उस बंधन से मुक्त करके ईश्वर की संतान के रूप में जीना सिखाता है। सबसे पहले, पवित्र आत्मा हमें पाप का बोध कराता है। जब तक मनुष्य अपने पाप को नहीं पहचानता, तब तक वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। **"जब प्रभु आयेगा, तो पाप, धार्मिकता और न्याय विषय में संसार का भ्रम प्रमाणित कर देगा"** (योहन 16:8)। पाप का बोध कराने के बाद पवित्र आत्मा हमें पश्चात्ताप और जीवन-परिवर्तन की ओर ले जाता है। वह हमारे हृदय को बदलता है और हमें ईश्वर की ओर लौटने का सामर्थ्य प्रदान करता है। पवित्र आत्मा हमें मसीह में नया जीवन देता है। **"मैं तुम लोगों को एक नया हृदय दूगाँ। मैं तुम्हारे शरीर से पत्थर का हृदय निकालकर तुम लोगों को रक्त माँस का हृदय प्रदान करूँगा"** (एजे. 36:26)।

**पवित्र आत्मा हमें भय से मुक्त कर विश्वास की ओर ले जाता है:** भय मुनष्य को कमजोर, निराश और असहाय बना देता है, किंतु पवित्र आत्मा हमारे भीतर साहस, विश्वास और आशा का संचार करता है। जहाँ भय हमें पीछे हटाता है, वहीं पवित्र आत्मा हमें ईश्वर पर भरोसा करके आगे बढ़ना सिखाता है। **"ईश्वर ने हमें भीरुता का नहीं, बल्कि सामर्थ्य, प्रेम तथा आत्मसंयम का मनोभाव प्रदान किया है"** (2 तिमथी 1:7)। पवित्र आत्मा हमें ईश्वर की संतान होने का विश्वास दिलाता है। **"जो लोग ईश्वर के आत्मा से संचालित हैं, वे सब ईश्वर के पुत्र हैं - आप लोगों को दासों का मनोभाव नहीं मिला, जिस से प्रेरित होकर आप फिर डरने लगे"** (रोमियों 8:15)। इस प्रकार पवित्र आत्मा हमें शांति से भर देता है।

### स्वतंत्र जीवन की पहचान: आत्मा के फल उत्पन्न करना

हमारे स्वतंत्र जीवन की सबसे बड़ी पहचान पवित्र आत्मा के फलों को उत्पन्न करना, जो कि प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, कृपा और भलाई, विश्वास, नम्रता, आत्मसंयम, और ईश भक्ति के साथ जीवन व्यतीत करना। वर्तमान समय में लोग यह मानते हैं कि जो मन में आए वही करना स्वतंत्रता है, किंतु ऐसी स्वतंत्रता अक्सर मनुष्य को पाप और आत्म विनाश की ओर ले जाती है। सच्ची स्वतंत्रता का प्रमाण केवल बाहरी सफलता नहीं, बल्कि एक ऐसा परिवर्तित हृदय है, जिसमें पवित्र आत्मा के फल स्पष्ट

दिखाई देते हैं।

**आधुनिक बंधनों से पवित्र आत्मा कैसे मुक्ति प्रदान करता है?**

आज के समय में अनेक प्रकार के आधुनिक बंधन लोगों को जकड़े हुए हैं। इसमें डिजिटल और सामाजिक बंधन, क्षमा न कर पाने की प्रवृत्ति, कठोर हृदय, निराशा और अर्थहीनता की भावना, भौतिकवाद और लालच, चिंता तथा स्वार्थ प्रमुख हैं। पवित्र आत्मा हमें इन बंधनों से मुक्त करके सच्ची स्वतंत्रता प्रदान करता है।

भविष्य की चिंता, असफलता का भय, बीमारी और आर्थिक असुरक्षा आज अनेक लोगों को व्याकुल करती हैं। पवित्र आत्मा हमारे हृदय में विश्वास, साहस और शांति भर देता है। पवित्र वचन कहता है, **"किसी बात की चिंता न करें। हर जरूरत में प्रार्थना करें और विनय तथा धन्यवाद के साथ ईश्वर के सामने अपना निवेदन प्रस्तुत करें और ईश्वर की शांति जो हमारी समझ से परे है, आपको ईसा मसीह में संरक्षित रखेगी"** (फिलिप्पियों 4:6-7)।

भौतिकवाद और लालच आधुनिक युग के ऐसे बंधन हैं, जो मनुष्य को कभी संतुष्ट नहीं होने देते। पवित्र आत्मा हमें सिखाता है कि हमारा वास्तविक खजाना ईश्वर ही है। **"तुम सब से पहले ईश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो और ये सब चीज़ें तुम्हें यूँ ही मिल जायेगी"** (मत्ती 6:33)।

क्रोध, ईर्ष्या और बदले की भावना मनुष्य को भीतर से कैदी बना देती हैं। जो इनके वश में रहता है, वह स्वयं ही विनाश की ओर बढ़ता है। किंतु पवित्र आत्मा हमें क्षमा करने, प्रेम करने और मेल-मिलाप का जीवन जीने की सामर्थ्य देता है। **"आप लोग सब प्रकार की कटुता, उत्तेजना, क्रोध, लड़ाई-झगड़ा, परनिंदा और हर तरह की बुराई अपने बीच से दूर करें। एक-दूसरे के प्रति दयालु तथा सहृदय बनें। जिस तरह ईश्वर ने मसीह के कारण आप लोगों को क्षमा कर दिया, उसी तरह आप भी एक-दूसरे को क्षमा करें"** (एफे. 4:31-32)।

पवित्र आत्मा केवल हमारे बंधनों को ही नहीं तोड़ता, बल्कि हमें सत्य, प्रेम, पवित्रता, आनंद और ईश्वर की संतान होने की स्वतंत्रता में चलना भी सिखाता है। वह हमें दूसरों की सेवा और प्रेम कर जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यही सच्ची स्वतंत्रता है, जिसके बारे में संत पौलुस कहते है - **"जहाँ प्रभु का आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है।"**

**फा. फ्रांसिस पिन्टो,** दाह फार्म

✦✦✦✦✦✦✦

# आज़ादी का भ्रम...?

15 अगस्त 1947 का दिन भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। इसी दिन हमारे देश ने लगभग 200 वर्षों की अंग्रेजी गुलामी से मुक्ति पाई। लाखों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया ताकि आनेवाली पीढ़ियाँ स्वतंत्र वातावरण में साँस ले सकें। महात्मा गांधी, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, सुभाष चंद्र बोस, रानी लक्ष्मीबाई और अनगिनत वीरों के संघर्ष ने हमें राजनीतिक स्वतंत्रता दिलाई। लेकिन आज, स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी यह प्रश्न हमारे मन में उठता है कि क्या हम वास्तव में पूरी तरह आज़ाद हैं?

यदि हम अपने चारों ओर नज़र डालें तो पाएँगे कि आज भी हमारा समाज कई ऐसी समस्याओं से घिरा हुआ है जो हमारी वास्तविक स्वतंत्रता में बाधा बनती हैं। भ्रष्टाचार आज भी देश की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। कई बार योग्य व्यक्ति को उसका अधिकार नहीं मिल पाता, जबकि रिश्वत और सिफारिश के बल पर गलत लोग आगे बढ़ जाते हैं। इसके साथ ही बेरोज़गारी, महँगाई, अपराध, महिलाओं के प्रति हिंसा, जातिवाद, धार्मिक कट्टरता और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याएँ हमारे विकास की राह में रुकावट बनती हैं। इन परिस्थितियों में यह महसूस होता है

कि हम विदेशी शासन से तो मुक्त हो गए, लेकिन इन सामाजिक बुराइयों की बेड़ियों में अब भी जकड़े हुए हैं।

आजादी का अर्थ केवल अपने देश का अपना संविधान और अपनी सरकार होना नहीं है। सच्ची आज़ादी तब होगी जब हर नागरिक को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय और सम्मान प्राप्त हो। जब किसी गरीब को अपने अधिकार के लिए दर-दर न भटकना पड़े, जब महिलाओं को बिना भय के कहीं भी आने-जाने की स्वतंत्रता हो, जब युवाओं को उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार मिले और जब हर व्यक्ति ईमानदारी को अपना सबसे बड़ा धर्म समझे, तभी हम वास्तविक स्वतंत्रता का अनुभव कर पाएँगे। देश की प्रगति केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर नागरिक का भी कर्तव्य है।

आज के समय में एक और बड़ी चुनौती है मानसिक और डिजिटल गुलामी। हम सोशल मीडिया, झूठी खबरों, नफरत फैलाने वाली बातों और दिखावे की संस्कृति के इतने आदी हो चुके हैं कि कई बार सही और गलत में अंतर करना भी कठिन हो जाता है। पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन और स्वार्थ की बढ़ती भावना भी हमें एक बेहतर समाज बनाने से रोकती हैं। यदि हम इन बुराइयों पर नियंत्रण नहीं कर पाए, तो हमारी स्वतंत्रता अधूरी ही रहेगी।

हमें यह समझना होगा कि स्वतंत्रता केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी भी है। यदि हर नागरिक ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करे, कानून का सम्मान करे, भ्रष्टाचार का विरोध करे, स्वच्छता बनाए रखे और समाज में प्रेम, समानता तथा भाईचारे का संदेश फैलाए, तो भारत निश्चित रूप से एक आदर्श राष्ट्र बन सकता है। हमें केवल स्वतंत्रता दिवस मनाने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन मूल्यों को भी अपने जीवन में अपनाना चाहिए जिनके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया।

अंत में, यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत को अंग्रेज़ों की गुलामी से तो आज़ादी मिल चुकी है, लेकिन भ्रष्टाचार, अन्याय, असमानता, हिंसा और सामाजिक बुराइयों से आज़ादी की लड़ाई अभी भी जारी है। जिस दिन हर भारतीय ईमानदारी, समानता और मानवता को अपने जीवन का आधार बना लेगा, उसी दिन हमारा देश वास्तविक अर्थों में पूर्णतः स्वतंत्र कहलाएगा।

**शिवांगी शर्मा**, ईसाईनगर

✦✦✦✦✦✦✦

## स्वतंत्रता और नई पीढ़ी

स्वतंत्रता केवल पर्व नहीं, जीवन का है मान
इसकी रक्षा करना हम सबका सबसे बड़ा अभियान।
मोबाइल की दुनिया में मत खुद को खो जाना
सच और झूठ की राहों को समझकर आगे बढ़ जाना।
ज्ञान की रोशनी लेकर हर अंधियारा मिटाना
मेहनत, सेवा और सच्चाई से भारत को सजाना।
नफरत की दीवारों को प्रेम से हम गिराएँ
एकता की खुशबू से हर आँगन महकाएँ।
नई पीढ़ी की पहचान हो, संस्कारों का सम्मान
ईमानदारी, साहस और कर्म बने हमारी शान।
स्वतंत्रता का अर्थ नहीं मनमानी की उड़ान
कर्तव्यों का पालन करना ही है सच्चा सम्मान।
आओ मिलकर आज सभी यह संकल्प उठाएँ
स्वतंत्र भारत को दुनिया का सबसे श्रेष्ठ बनाएँ।
स्वतंत्रता की लौ जलती रहे, यही हमारी आस
नई पीढ़ी लिखेगी भारत का स्वर्णिम इतिहास।

**कु0 सांघी पवार**,
काशीपुर

# समाचार दर्शन

## संत अन्थोनी पर्व दिवस

**शाहजहाँपुर :** दिनांक 12 जुलाई 2026 को संत रफायल गिरजाघर, शाहजहाँपुर में महान संत अन्थोनी का पर्व हर्षोल्लास तथा अर्थपूर्ण तरीके से मनाया गया। सर्वप्रथम आराधना और प्रार्थना द्वारा प्रारम्भ किया गया, जिसका संचालन हमारे पल्ली पुरोहित फा0 विजय टेल्लिस ने किया। तत्पश्चात सभी श्रद्धालु गिरजाघर प्रांगण के मुख्य गेट पर पहुँचे। वहाँ से संत अन्थोनी की प्रतिमा को जुलूस के साथ गाते-बजाते हुए वेदी के समक्ष लायी गयी। उसके पश्चात् पवित्र मिस्सा बलिदान आरम्भ हुआ। पूजन विधि का संचालन महिलाओं द्वारा किया गया।

पवित्र मिस्सा बलिदान के बाद, संत अन्थोनी के जीवन से सम्बन्धित एक लघु नाटिका का प्रर्दशन किया गया। संत अन्थोनी का पर्व मनाने के लिए हमारे पल्ली पुरोहित फा0 विजय टेल्लिस ने लोगों को प्रोत्साहित किया। इस दिन हमारे पल्ली के उत्साहवर्धन के लिए डिनरी के फा0 संतोष तथा फा0 अभिनव भी उपस्थित रहे। **श्रीमती सुशीला विजय,** शाहजहाँपुर

✦✦✦✦✦✦✦

## संत पेत्रुस पर्व दिवस

**बैलपड़ाव:** दिनांक 5 जुलाई 2026 (रविवार) को परमपिता ईश्वर की असीम कृपा से बैलपड़ाव पल्ली में, पल्ली के संरक्षक संत, संत पेत्रुस का पर्व बड़ी धूमधाम व भक्तिभाव से मनाया गया। इसमें बरेली धर्मप्रांत के धर्माध्यक्ष मान्यवर इग्नेशियस डिसूजा, पल्ली पुरोहित फा. हेनरी मेंडोन्सा, फा. फेलिक्स लोबो एवं गदरपुर से आए पुरोहित फा. बिजोय, धर्मबहनों व अतिथिगणों ने भाग लिया। इस दिन की पूजनविधि की तैयारी पल्ली समिति व युवा मंडल द्वारा की गई। धर्माध्यक्ष ने मिस्सा बलिदान के दौरान अपने प्रवचन में सभी पल्लीवासियों का अपने आशीर्वचनों के द्वारा मार्गदर्शन किया। मिस्सा के अंत में पल्ली पुरोहित फा. हेनरी मेंडोन्सा ने सभी का आभार व्यक्त किया। तत्पश्चात् सबने प्रीतिभोज में भाग लिया।

**निर्मला जोसफ,** बैलपड़ाव

✦✦✦✦✦✦✦

## पौधारोपण कार्यक्रम

**खटीमा:** सीमांत में हरेला पर्व के उपलक्ष्य में जगह-जगह पौधारोपण किया गया। विद्यालय के बच्चों ने उत्साहपूर्वक पौधे लगाए और धरा को हरा-भरा करने का संकल्प लिया।

सेंट जेवियर सीनियर सेकेंडरी विद्यालय में प्रबंधक फा. पीटर मलिथारा, प्रधानाचार्या सि. थेरेसा एंटनी के मार्गदर्शन में पौधारोपण किया गया, जिसमें विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। इस दौरान जूनियर वर्ग के विद्यार्थियों के लिए भाषण प्रतियोगिता की गई, जिसमें हरेला पर्व, प्रकृति संरक्षण व वृक्षों के महत्व पर विद्यार्थियों ने विचार रखे। वहीं सीनियर वर्ग के विद्यार्थियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

**फा. पीटर,** खटीमा

✦✦✦✦✦✦✦

## पवित्र आत्मा का सामर्थ्य

**सितारगंज:** अनुग्रह आश्रम, सितारगंज में 26 से 28 जून 2026 तक आयोजित तीन दिवसीय "आत्मा अभिषेक साधना" विश्वासियों के लिए ईश्वर की अनुग्रहपूर्ण उपस्थिति का एक अविस्मरणीय अनुभव बन गई। बरेली धर्मप्रांत सहित विभिन्न राज्यों एवं स्थानों से आए अनेक विश्वासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और प्रार्थना, ईश्वर के वचन तथा पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के माध्यम से अपने जीवन में आत्मिक नवीनीकरण का अनुभव किया। इस साधना का संचालन श्रद्धेय फा. अशोक अलेक्जांडर, फा. फ्रांसिस पिंटो तथा ब्र. डेविड (पंजाब) ने किया। तीनों वक्ताओं ने पवित्र आत्मा के विविध आयामों पर अत्यंत प्रेरणादायी एवं जीवन-परिवर्तनकारी संदेश प्रस्तुत किए। अपने प्रथम प्रवचन में फा. अशोक अलेक्जांडर ने प्रेरित पौलुस के शब्दों पर आधारित गहन मनन प्रस्तुत किया। "प्रत्येक को आत्मा का प्रकटीकरण सबके लाभ के लिए दिया जाता है" (1 कुरि. 12:7)।

फा. फ्रांसिस पिंटो ने अपने प्रेरणादायी संदेश में विश्वासियों को पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में जीवन जीने का आह्वान किया। तीन दिवसीय इस साधना में अधिक संख्या में खीस्तीय भाई-बहनों और ख्रीस्त-विश्वासियों ने भाग लेकर पवित्र आत्मा के सामर्थ्य और अनुग्रह का अनुभव किया।

**फा. अशोक अलेक्जांडर,** सितारगंज

✦✦✦✦✦✦✦

## महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम

**मोतीनगर:** "जब एक महिला कोई कौशल सीखती है, तो वह केवल अपनी ही नहीं, बल्कि अपने पूरे परिवार और समाज के भविष्य को संवारती है।" जीवनदान समाज सेवा केंद्र, मोतीनगर द्वारा पीको, गड़ेरियाबाग एवं हरिपुर शिवदत्त गांवों में तीन माह का सिलाई एवं ब्यूटीशियन प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। प्रशिक्षण गांवों में ही आयोजित होने के कारण महिलाओं एवं युवतियों ने नियमित रूप से भाग लिया और घर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ एक नया कौशल भी सीखा। इस कार्यक्रम से कुल 50 लाभार्थी लाभान्वित हुए, जिनमें 38 महिलाओं एवं युवतियों ने सिलाई प्रशिक्षण तथा 12 युवतियों ने ब्यूटीशियन प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों ने सिलाई, कपड़ों की कटिंग एवं स्टिचिंग तथा ब्यूटीशियन से संबंधित व्यावहारिक कौशल सीखे।

प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद कई महिलाएं एवं युवतियां अपने गांवों में ही सिलाई एवं ब्यूटीशियन का कार्य कर 1,500 – 2,000 प्रतिमाह तक की आय अर्जित कर रही हैं। इससे वे अपने परिवार की आर्थिक सहायता करने के साथ-साथ आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी भी बनी हैं। लाभार्थियों ने जीवनदान समाज सेवा केंद्र, मोतीनगर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण ने उन्हें केवल रोजगार का अवसर ही नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और बेहतर भविष्य की नई आशा भी प्रदान की है। "कौशल से आत्मनिर्भरता, आत्मनिर्भरता से सम्मान और सम्मान से सशक्त समाज का निर्माण होता है।"

**सि. एन्न MSI,** मोतीनगर

✦✦✦✦✦✦✦

## बेटी सशक्तिकरण कार्यक्रम

**आँवला:** बरेली धर्मप्रांतीय समाज सेवा केंद्र (BDSSC) की EEE परियोजना के अंतर्गत गठित 'प्रतीक किशोरी समूह' ने ग्राम बरीनगला में बेटियों की शिक्षा और सशक्तिकरण की दिशा में प्रेरणादायक बदलाव की मिसाल पेश की है। समूह के नियमित प्रशिक्षण, बैठकों और परिवारों के साथ संवाद के सकारात्मक परिणाम अब समुदाय में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। सितंबर 2024 में गठित इस समूह का उद्देश्य किशोरियों को शिक्षा, स्वास्थ्य, नेतृत्व और आत्मविश्वास के प्रति जागरूक बनाना था। शुरुआत में गाँव में बेटियों की उच्च शिक्षा को लेकर सामाजिक संकोच और आर्थिक कठिनाइयाँ बड़ी चुनौती थीं। समूह ने लगातार प्रयास करते हुए परिवारों को जागरूक किया और लड़कियों को अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया। इन प्रयासों का सबसे प्रेरणादायक उदाहरण गीता बनीं, जिन्होंने मेडिकल क्षेत्र में करियर बनाने का सपना देखा। समूह और BDSSC दल के सहयोग से परिवार को समझाया गया, जिसके बाद गीता ने GNM पाठ्यक्रम के लिए आवेदन किया और उनका चयन बरेली मेडिकल कॉलेज में हो गया। गीता की सफलता ने पूरे गाँव की सोच को सकारात्मक दिशा दी है। अब अधिक परिवार अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। यह पहल दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन, सामुदायिक सहयोग और किशोरी समूहों की सक्रिय भूमिका से सामाजिक परिवर्तन संभव है तथा बेटियों के उज्ज्वल भविष्य की नई राहें खुल सकती हैं।

**विपिन,** आँवला

✦✦✦✦✦✦✦

## साइबर सुरक्षा संगोष्ठी

**करेली:** दिनांक 17 जुलाई 2026 को मदर तेरेसा विद्यालय में बैंक ऑफ बड़ौदा, शाखा करगैना, के शाखा प्रबंधक आलोक गुप्ता एवं सहायक प्रबंधक रजनी मिश्रा द्वारा 'साइबर सुरक्षा जागरुकता' विषय पर एक ज्ञानवर्धक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कक्षा दस से कक्षा बारहवीं के विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित रहे। प्रधानाचार्या सि. शालिनी व शान्ति निकेतन (SCJM) की सुपीरियर सि. सरोज उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को डिजिटल लेन-देन के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों तथा साइबर अपराधों से बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करना था। अधिकारियों ने ऑनलाइन धोखाधड़ी, फिसिंग, ओटीपी साझा न करने, मजबूत पासवर्ड का उपयोग करने तथा संदिग्ध लिंक

और एपीके संदेशों से सावधान रहने जैसी आदि अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा कीं। उन्होंने डिजिटल बैंकिंग की जानकारी दी और विद्यार्थियों को सुरक्षित उपयोग करने के व्यवहारिक सुझाव भी दिए। विद्यार्थियों को साइबर क्राइम हेल्पलाइन नं.–1930 व ई–मेल - www.sho-cybercrime.br@up.gov.in साझा किया और शिक्षकों व छात्रों के प्रश्नों के उत्तर देकर उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम के समापन पर शिक्षक श्री विजय कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए बैंक ऑफ बड़ौदा के शाखा प्रबंधक, सहायक प्रबंधक एवं सभी उपस्थित अतिथियों का विद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करने हेतु इस ज्ञानवर्धक संगोष्ठी के आयोजन के लिए बैंक अधिकारियों को विशेष धन्यवाद दिया।

**भुवनेश्वरी अधिकारी**, मदर तेरेसा विद्यालय करेली

✦✦✦✦✦✦✦

# बीईसी सेवा दल प्रशिक्षण

**पोलीगंज:** 5 जुलाई 2026 को बरेली धर्मप्रांत के पोलीगंज डीनरी में बीईसी आयोग द्वारा डीनरी बीईसी सेवा दल प्रशिक्षण एवं बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में सात पल्लियों पोलीगंज, नौसर, दाहा फार्म, कैलाश कॉलोनी, सितारगंज, खटीमा एवं अमरिया के 22 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ डीन फा. हेरॉल्ड डी'कुन्हा के नेतृत्व में बाइबिल जुलूस से हुआ। इसके पश्चात फा. रूडोल्फ रोड्रिग्स ने प्रारंभिक प्रार्थना का नेतृत्व किया। प्रशिक्षण सत्र में फा. मौरिस ने बीईसी का इतिहास, उद्देश्य तथा कलीसिया में एकता के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद फा. रोमन डायस ने बीईसी की आवश्यकता, उसकी भूमिका तथा प्रत्येक विश्वासी के जीवन में उसके महत्व को विस्तार से समझाया। सक्रिय समूह चर्चा एवं विचार–विमर्श के उपरांत सातों पल्लियों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित करते हुए पोलीगंज डीनरी बीईसी परिषद का गठन किया गया। पोलीगंज डीनरी निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन किया गया:

**सचिव:** श्रीमती सुसी सोफिया (खटीमा पल्ली)

**मीडिया प्रभारी:** श्री विशाल (सितारगंज पल्ली)

बैठक का समापन विश्वास, एकता तथा ईश्वर के वचन के प्रति समर्पण की भावना के साथ हुआ। इस प्रशिक्षण एवं बैठक ने सभी प्रतिभागियों को बीईसी के माध्यम से अपने–अपने पल्लियों में सामुदायिक जीवन, सहभागिता और सुसमाचार के संदेश को और अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

**श्रीमती सुसी सोफिया** (सचिव), पोलिगंज

✦✦✦✦✦✦✦

# बीईसी सेवा दल प्रशिक्षण एवं बैठक

**काठगोदाम:** 19 जुलाई 2026 को बरेली धर्मप्रांत के काठगोदाम डीनरी में बीईसी आयोग द्वारा डीनरी स्तरीय बीईसी सेवा दल प्रशिक्षण एवं बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में सात पल्लियों काठगोदाम, चोरगलिया, ज्योलीकोट, किच्छा, नैनीताल, ईसाईनगर तथा रुद्रपुर के 24 प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक सेंट जोसेफ गिरजाघर प्रांगण, ईसाईनगर में भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ फा. रोमन डायस के नेतृत्व में बाइबिल जुलूस के साथ हुआ। इसके पश्चात् फा. मौरिस ने प्रारंभिक प्रार्थना का नेतृत्व किया। प्रशिक्षण सत्र में फा. मौरिस ने बीईसी का इतिहास, उद्देश्य तथा कलीसिया में एकता के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद फा. रोमन डायस ने बीईसी की आवश्यकता, उसकी भूमिका तथा प्रत्येक विश्वासी के जीवन में उसके महत्व को विस्तारपूर्वक समझाया। सक्रिय समूह चर्चा एवं विचार–विमर्श के उपरांत सातों पल्लियों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित करते हुए काठगोदाम डीनरी बीईसी परिषद का गठन किया गया। नवनिर्वाचित पदाधिकारी इस प्रकार हैं:

**सचिव:** श्री संजीव मसीह (चोरगलिया)

**मीडिया प्रभारी:** सुश्री मनीषा (ज्योलीकोट)

बैठक का समापन विश्वास, एकता तथा ईश्वर के वचन के प्रति समर्पण की भावना के साथ हुआ। इस प्रशिक्षण एवं बैठक ने सभी प्रतिभागियों को बीईसी के माध्यम से अपने–अपने पल्लियों में सामुदायिक जीवन, सहभागिता तथा सुसमाचार के संदेश को और अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

**श्री संजीव मसीह** (सचिव), काठगोदाम

# वृक्षारोपण कार्यक्रम - 'एक वृक्ष अनेक जीवन'

**सितारगंज:** "जो आज एक वृक्ष लगाता है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन का उपहार देता है।" ईश्वर की सृष्टि मानव जाति के लिए एक अमूल्य वरदान है। इस सृष्टि की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक दायित्व है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अनुग्रह आश्रम, सितारगंज में एक प्रेरणादायक वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आश्रम परिवार के सभी सदस्यों ने पूरे उत्साह और समर्पण के साथ सहभागिता की तथा अनेक छायादार एवं फलदार पौधों का रोपण किया।

इस पावन अवसर पर फा. अशोक के साथ फा. सौरभ बीरो, फा. चिन्नाप्पन, सि. लिसियस मेरी, भाई नागेंद्र आमोस तथा आश्रम परिवार के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे। सभी ने वृक्षारोपण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। यह कार्यक्रम केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि प्रकृति के प्रति प्रेम, उत्तरदायित्व और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक हरित एवं स्वच्छ भविष्य के निर्माण का प्रेरणादायक संदेश भी बन गया। आज बढ़ते प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट के इस दौर में वृक्षारोपण समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। एक परिपक्व वृक्ष हजारों लोगों को शुद्ध वायु, शीतल छाया, वर्षा का संतुलन, जैव-विविधता का संरक्षण तथा जीवन का आधार प्रदान करता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति यदि प्रतिवर्ष कम से कम एक वृक्ष लगाए और उसकी देखभाल करे, तो हमारी धरती पुनः हरित, स्वच्छ और जीवनदायिनी बन सकती है।

**फा. आशोक,** सितारगंज

✦✦✦✦✦✦✦

# रक्षा बंधन

### प्रेम भरा रेशम का धागा

प्रेम स्नेह भावनाओं से भरा एक त्यौहार रक्षाबंधन भारत का एक मुख्य त्यौहार है जो भाई-बहन के बीच के स्नेही संबंध को दर्शाता है। रक्षाबंधन संपूर्ण भारत में मनाया जाने वाला त्यौहार है जो न केवल शाब्दिक रूप से बल्कि भाई और बहन की हृदय स्पर्शी भावनाओं से भरा है। इस दिन बहनें अपने भाई को कलाई में केवल रेशम का धागा नहीं बांधती हैं बल्कि अपने प्रेम, सम्मान व विश्वास को बांधती हैं कि उसका भाई सदैव उसके साथ प्रेम के इस बंधन से बंधा रहेगा। वह उसकी रक्षा करेगा तथा भाई की लम्बी आयु की कामना करती हैं और भाई अपने प्रेम को दिखाने के लिए अपनी बहन को उपहार देता है । एक दूसरे का मुंह मिठाई से मीठा कर अपने प्रेम को मिठास से भर देते हैं।

वास्तव में यह त्यौहार धार्मिक रूप से भी जुड़ा हुआ है। महाभारत काल में कृष्ण और द्रौपदी तथा इंद्रदेव और शची की कथा से जुड़ा है। यह भगवान कृष्ण द्वारा द्रौपदी की रक्षा के लिए भी प्रसिद्ध है और जिसके प्रभाव से इंद्रदेव ने असुरों पर विजय प्राप्त की। उसी प्रकार भगवान कृष्ण को जब द्रौपदी ने अपनी साड़ी के पल्ले के भाग को अलग करके भगवान कृष्ण के हाथ से निकल रहे रक्त को रोकने के लिए बांधा तो भगवान कृष्ण ने द्रौपदी को अपनी बहन होने और भविष्य में उसकी रक्षा करने का वचन दिया। यही नहीं, भारत राष्ट्र सभी धर्मों के आपसी सौहार्द प्रेम के लिए प्रसिद्ध रहा है। इसका एक उदाहरण हमें चित्तौड़ की हिंदू रानी कर्णावती मुगल सम्राट हुमायूं से मिलता है, जो रानी कर्णावती के राखी भेजने पर उसका मान रखते हैं। और उनकी रक्षा के लिए सुल्तान बहादुर शाह से युद्ध करते हैं। आज रक्षाबंधन को पर्यावरण से जोड़कर भी मनाया जाता है। रक्षाबंधन के इस त्योहार में सब देशवासियों के बीच प्रेम शांति की भावना बनी रहे, वह सभी एक दूसरे के प्रति दायित्वों को निभा सकें, इसी कामना के साथ सभी को रक्षाबंधन की हार्दिक बधाई।

**इमानुएल जेम्स,** संत एंथोनी इंटर कॉलेज, ज्योलीकोट

# बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 130

## राजाओं का दूसरा ग्रन्थ (अध्याय 1-12)

**अध्याय एवं पद संख्या का उल्लेख करें। कृपया अपने उत्तर 24 अगस्त 2026 तक भेज दें।**

1. किसने घर आकर लड़के को अपने पलंग पर मरा हुआ पाया ?
2. किसने कहा, "येहू! क्या तुम शांति के अभिप्राय से आए हो ?"
3. कौन लोगों का जयकार सुनकर प्रभु के मंदिर में लोगों के पास आई ?
4. .............का शेष इतिहास और उसका कार्यकलाप यूदा के राजाओं के ग्रंथ में लिखा है।
5. "इस्राएल का राजा दीवार के ऊपर चल रहा था।" सही या गलत ?
6. किसके कहने के अनुसार वह पानी स्वच्छ हो गया ?
7. ...........की बीमारी सदा तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को लगी रहे।
8. किसने कहा, "मेरे स्वामी और राजा! यह वही स्त्री है और यही है उसका पुत्र जिसे एलीशा ने पुनः जीवित कर दिया था" ?
9. टाट का वस्त्र और कमर में कसा हुआ चमड़े का कमरबंद पहने व्यक्ति का क्या नाम था ?
10. ..............का राजा मेशा भेड़ों का पालन करता था।
11. नगर- द्वार के पास कितने कोढ़ी बैठे हुए थे ?
12. अहज्या कब यूदा राजा बना था ?

**Prepared by: Miss Shweta D Cruze**

**सूचना: कृपया अपने उत्तर इस इमेल पते पर भेजें: chetnabareilly1989@gmail.com अथवा इस नम्बर के वाट्सएप पर भेजें: 8533886703 उत्तर के साथ अपना और अपनी पल्ली का नाम अवश्य लिखें।**

✦✦✦✦✦✦✦

# MY FAITH (CATECHISM QUIZ) - 130

## CATECHISM OF THE CATHOLIC CHURCH: ARTICLES (2558-2577)

**Please send your answers latest by 24 August 2026. Kindly send your answers only:**

1. What restores man to God's likeness and enables him to share in the power of God's Love?
2. God is love he is there for____ and_____.
3. Who is in search of God?
4. Who said,"Prayer is the raising of one's mind and heart to God or The requesting of good things from God"?
5. Our prayer of_______ is a response to the plea of the living God.
6. Where does the church professes the mystery of Faith?
7. Christian prayer is a covenant relationship between God and man in Christ. True or false?
8. According to the scripture , where does prayer come from?
9. All ________ bear witness to men's essential search for God.
10. Who is the ancestor of the twelve tribes of Israel?
11. Who is very humble, more so than anyone else in the face of the earth?
12. Where in the Holy Bible we find that , the revelation of prayer comes between the fall and the Restoration of man?

**Prepared by: Miss Shweta D Cruze**

## बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 129 के उत्तर

1. यूदा के राजाओं के इतिहास ग्रंथ (14:18)
2. एल्याकीम, शेबना (19:2)
3. अपने महल के बगीचे में (21:18)
4. इक्कीस (24:18)
5. अंजीर की रोटी (20:7)
6. इस्रायली (17:22)
7. योआश (13:10)
8. अजर्या (15:5)
9. सही (22:1)
10. यहोयाकीन (25:30)
11. गलत (23:3)
12. पच्चीस (18:2)

## मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 129 के उत्तर

1. Envy CCC 2538
2. Tenth CCC 2534
3. Trust in God CCC 2546
4. True CCC 2541
5. Detachment from riches CCC 2544
6. Pride CCC 2540
7. The sensitive appetite CCC 2535
8. Envy CCC 2538
9. False CCC 2536
10. All Christ's Faithful CCC 2545
11. The apostle CCC 2546
12. The Spirit and the Bride CCC 2550

## बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 129 के विजेता

प्रथम पुरस्कार - एलिन, सितारगंज

द्वितीय पुरस्कार - अल्फ्रीडा, नवाबगंज

तृतीय पुरस्कार - सि. अक्षिता, टनकपुर

## My Faith (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 129 के विजेता

प्रथम पुरस्कार - इशिका, बाजपुर

द्वितीय पुरस्कार - अजीत, पिथौरागढ़

तृतीय पुरस्कार - ग्रेसी पवन, मोतीनगर

## BIRTHDAYS

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Most. Rev. Ignatius D'Souza | 04 August |
| 2 | Rev. Fr. Peter Malithara | 10 August |
| 3 | Rev. Fr. Paul Falleira | 19 August |
| 4 | Rev. fr. Charles Falleira | 29 August |